

## भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकार एवं पूर्ण बहुमत की सरकार: तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. अनूप मिश्र\*

\*प्रवक्ता, इंटरमीडिएट कॉलेज खामपार, देवरिया

E-Mail: [anoopbh8840@gmail.com](mailto:anoopbh8840@gmail.com)

DOI: [doi.org/10.5281/zenodo.18200388](https://doi.org/10.5281/zenodo.18200388)

Accepted on: 07/01/2026

Published on: 10/01/2026

### सारांश:

गठबंधन सरकारें अर्थात् (दो या 2 से अधिक दल) नीतियों में आम सहमति और समझौते पर चलती हैं, जिससे स्थिरता कम हो सकती है, लेकिन यह अच्छाई जरूर है कि विभिन्न विचारों का प्रतिनिधित्व होता है; जबकि पूर्ण बहुमत की सरकारें अर्थात् (एक दल का स्पष्ट बहुमत) नीतियों को तेजी से लागू करती है, लेकिन खामियां यह है कि वह पूर्ण सत्तावादी हो सकती है और संस्थानों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा सकती है, हालांकि भारत के इतिहास में दोनों ही तरह की सरकारों में विकास के अलग-अलग दौर देखें गए हैं।

**महत्वपूर्ण शब्द:** गठबंधन सरकार, पूर्ण सत्तावादी, पूर्ण बहुमत सरकार, स्वतंत्रता, एक दल, दो दल, भारतीय राजनीति, आम सहमति, विकास, प्रतिनिधित्व, स्थिरता, नीतियां।

### प्रस्तावना:

पूर्ण बहुमत की सरकार (Majority Government) वो होती है जहाँ एक पार्टी अकेले ही संसद में सरकार बनाने के लिए ज़रूरी सीटें जीत लेती है, जिससे स्थिरता और मजबूत निर्णय लेने की शक्ति मिलती है, जबकि गठबंधन सरकार (Coalition Government) तब बनती है जब कोई एक दल बहुमत नहीं पा पाता और कई पार्टियाँ मिलकर सरकार बनाती हैं, जिससे सत्ता साझा करनी पड़ती है और यह अक्सर राजनीतिक ज़रूरतों या साझा लक्ष्यों के लिए होता है। पूर्ण बहुमत वाली सरकार नीतियों को तेजी से लागू कर सकती है, वहीं गठबंधन सरकार में सर्वसम्मति और समझौते ज़रूरी होते हैं, जिससे संस्थाओं की स्वायत्ता और विपक्ष की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। दोनों सरकारों का क्रम से अध्ययन करना श्रेयष्ठ होगा। पूर्ण बहुमत सदन की कुल संख्या के 50% से अधिक का बहुमत होता है। उदाहरण के लिए लोकसभा में कुल 545 सदस्य हैं। इसलिए पूर्ण बहुमत 545 के 50% में 1 जोड़ने पर 273 होता है। विधायी या संसदीय कार्यवाही के दौरान पूर्ण बहुमत का उपयोग शायद ही कभी किया जाता है। हालांकि, आम चुनाव के दौरान केन्द्र और राज्य सरकारों के गठन के लिए इस बहुमत का उपयोग किया जाता है।

### पूर्ण बहुमत क्या है?

पूर्ण बहुमत से तात्पर्य सदन की कुल सदस्यता के 50% से अधिक बहुमत से है। इससे यह संकेत मिलता है कि लोकसभा में पूर्ण बहुमत 273 है (जो लोकसभा की कुल सदस्यता 545 से 50 प्रतिशत अधिक है)

- लोकसभा में पूर्ण बहुमत= सदन की कुल सदस्यता/2+1= 273
- राज्यसभा में पूर्ण बहुमत= सदन की कुल सदस्यता/2+1=123

जब सत्तारूढ़ दल को संसद में पूर्ण बहुमत प्राप्त होता है तो मंत्रिमंडल तानाशाही बन जाती है और उसके पास लगभग असीमित शक्तियां होतीं हैं। राष्ट्रपति चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार आयोजित किया जाता है, जिसमें एकल हस्तानांतरित वोट और गुप्त मतदान होता है। यह तंत्र सुनिश्चित करता है कि विजयी उम्मीदवार को वोटों का पूर्ण बहुमत प्राप्त होता हो। निष्कर्ष- पूर्ण बहुमत शब्द सदन की कुल संख्या के 50% से अधिक बहुमत को संदर्भित करता है। इस बहुमत का उल्लेख कभी नहीं किया जाता, लेकिन यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि किसी राजनीतिक दल को पूर्ण बहुमत प्राप्त है तो यह दर्शाता है कि वह सरकार बनाएगा और सदन स्थिर रहेगा।

### भारत में गठबंधन सरकार:

गठबंधन सरकार वह होती है जिसमें कई राजनीतिक दल एक साथ आते हैं और अक्सर उस पार्टी का प्रभुत्व कम कर देते हैं जिसने सबसे अधिक सीटें जीती हों। भारत की 77-78 वर्ष की चुनावी यात्रा में देश में 32 वर्ष तक गठबंधन सरकार का दौर रहा है, तथा 2024 जून से भी मोदी सरकार के तीसरे टर्म में गठबंधन सरकार ही है। 10 वर्ष के अंतराल के अंतराल के बाद गठबंधन की राजनीति वापस आई है और साथ ही गठबंधन धर्म भी वापस आ गया है जो भाजपा नेता स्व. अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा गढ़ा गया शब्द है। गठबंधन धर्म का मतलब गठबंधन सहयोगियों को उचित सम्मान देना है।

### भारत में गठबंधन राजनीति की भूमिका:

सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि दिलीय व्यवस्था में एक दिलीय सरकारों का गठन होता है जबकि बहुदलीय व्यवस्था में किसी भी राजनीतिक दलों को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के कारण गठबंधन सरकारों का गठन होता है। जहां तक भारत में गठबंधन सरकारों की गठन की बात है तो यहां सबसे पहले गठबंधन सरकार स्वतंत्रता के ठीक बाद 1967 में बनी थी, जब सत्ता का हस्तांतरण हुआ था और देश में अंतरिम सरकार गठित हुई थी। उसके बाद देश में हुई चुनावी राजनीति में विभिन्न दलों की भागीदारी कहीं पीछे छूट गई और चाहे संसदीय चुनाव हो या विधानसभा चुनाव हर जगह कांग्रेस अपने बल पर सरकार बनायी। 1971 से 76 के वर्षों में और पुनः 1980 से 88 के काल में केंद्र तथा अधिकांश राज्यों में कांग्रेस की प्रधानता का युग रहा जहां गठबंधन राजनीति की कोई संभावना नहीं थी।

परंतु 1960 के दशक के उत्तरार्ध में कांग्रेस के विरुद्ध बगावत के स्वर उभरने लगे जिसके फल स्वरूप 1967 में कई राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें बनी जो गठबंधन सरकार थी। 1962 में चीन के हाथों भारत की पराजय, निरंतर बढ़ती हुई महंगाई, नेहरू के बाद कांग्रेस में करिशमाई नेतृत्व का अभाव एवं डा. राम मनोहर लोहिया के गैर कांग्रेसवाद की नीति के कारण कांग्रेस पार्टी केंद्र में कमजोर होती चली गई। परिणामस्वरूप 1967-70 के काल में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, केरल और पंजाब में गठबंधन सरकारों का गठन हुआ। यह वह काल था जब कांग्रेस के प्रभुत्व का अवसान हुआ तथा राज्यों की राजनीति में गठबंधन सरकारों के नवीन युग का श्रीगणेश हुआ।

केंद्र स्तर पर चुनावी राजनीतिक प्रयोगशाला में गठबंधन का सर्वप्रथम प्रयोग मोरारजी देसाई के नेतृत्व में 1977 में बनी जो राजनीतिक महत्वाकांक्षा की भेंट चढ़ गया जिससे यह स्पष्ट कर दिया कि अगर भारतीय राजनीति में किसी एक दल की प्रभुता का अस्तित्व नहीं बना सकता। 1989 का वह वर्ष भारतीय राजनीति के लिए एक युगांतकारी वर्ष रहा है। जिसे वास्तविक रूप में केंद्र में गठबंधन की राजनीति का श्रीगणेश माना जा सकता है। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में दिसंबर 1989 में भाजपा तथा वामदलों के बाहर समर्थित समर्थन से राष्ट्रीय मोर्चा के रूप में जो सरकार बनी, वह 1990 में भाजपा द्वारा समर्थन वापस लेने से समाप्त हुई। नवंबर 1990 में श्री चंद्रशेखर के नेतृत्व में कांग्रेस समर्थित गठबंधन सरकार सत्तारूढ़ हुई, जो 21 जून 1991 तक रही। वर्ष 1991 में ही श्री पी.वी. नरसिंहा राव के नेतृत्व में कांग्रेस की स्थाई सरकार बनी जिसने अपना कार्यकाल पूर्ण किया। मई 1996 के आम चुनाव में पुनः किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होने से भाजपा ने अपने सहयोगियों संग सरकार गठन का दावा पेश किया और अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में गठबंधन सरकार का गठन हुआ, जिसका लोकसभा में अपना बहुमत सिद्ध न कर पाने से 13 दिनों में ही अंत हो गया। श्री अटल बिहारी बाजपेयी सरकार के पतन के बाद जून 1996 में देवगौरा के नेतृत्व में कांग्रेस समर्थित सरकार सत्तारूढ़ हुई, जो कांग्रेस के हठधर्मिता के कारण मात्र 10 माह बाद ही इसका अंत हो गया। अप्रैल 1997 में इंद्र कुमार गुजराल के नेतृत्व में कांग्रेसी एवं मार्क्सवादी दल समर्थित सरकार बनी, जिसका शीघ्र ही अंत हो गया। 12 वीं लोकसभा आम चुनाव 1998 बहुत महत्वपूर्ण है, जो त्रिशंकु संसद व खंडित जनादेश के रूप में अटल बिहारी बाजपेई के नेतृत्व में सरकार बनी जिसका अपने ही सहयोगी दल की हठधर्मिता के कारण अंत हो गया।

### **विशेषताएं:**

गठबंधन सरकार का तात्पर्य कम से कम साझेदारों के अस्तित्व से है। गठबंधन की राजनीति स्थिर नहीं बल्कि गतिशील होती है, क्योंकि गठबंधन के घटक और समूह विघटित हो जाते हैं और नए समूह बनाते हैं। गठबंधन राजनीति की पहचान विचारधारा नहीं बल्कि व्यावहारिकता है।

**‘वर्गीकरणः चुनाव पूर्व गठबंधन-** यह राजनीतिक पार्टियों को संयुक्त घोषणा पत्र के आधार पर मतदाताओं को लुभाने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है।

**चुनाव पश्चात गठबंधन-** यह घटकों को राजनीतिक शक्ति साझा करने और सरकार चलाने में सक्षम बनाता है।

केन्द्र में पहली बार गठबंधन सरकार- स्वतंत्र भारत में वर्ष 1977 में आपातकाल के ठीक बाद पहली बार राजनीतिक पार्टियों ने केन्द्र में गठबंधन सरकार का गठन किया था। भारतीय जनसंघ (भाजपा का पूर्ववर्ती नाम) सहित 11 राजनीतिक दलों ने मिलकर जनता सरकार बनायी। यह गठबंधन वर्ष 1979 तक सफलतापूर्वक चला। पहली बार भारत में अपना पूर्ण कार्यकाल पूरा करने वाली पहली गठबंधन सरकार वर्ष 1999 से वर्ष 2004 तक अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार थी। हालांकि कुछ लोगों का कहना कि गठबंधन सरकारें अधिक समावेशी नीतियां बनाती हैं। वहीं अन्य लोगों का मानना है कि गठबंधन सरकारें नीति निर्माण में बाधाएं डालती हैं।

#### **गठबंधन सरकारों का लाभः**

1. आर्थिक विकास हासिल करने में मदद करती है।
2. गठबंधन सरकार विविध हितों का समायोजन करता है।
3. गठबंधन सरकार नियंत्रण और संतुलन को बढ़ावा देती है।
4. गठबंधन सरकार आम सहमति पर आधारित राजनीति को बढ़ावा देती है।
5. गठबंधन की सरकार संघीय ढांचे को मजबूत करती है।
6. गठबंधन की सरकार में निरंकुशता की संभावना कम होती है।

#### **गठबंधन सरकार के दोषः**

1. गठबंधन सरकार में अस्थिरता होती है।
2. गठबंधन सरकार में प्रधानमंत्री का सीमित नेतृत्व होता है।
3. मंत्रिमंडल की भूमिका कमतर आंकना।
4. छोटी पार्टियां किंग मेकर की भूमिका निभा रही है।
5. क्षेत्रीय दल क्षेत्रीय कारकों को आगे ला रहे हैं।
6. विफलताओं के लिए जिम्मेदारी का अभाव।
7. मुद्रास्फीति पर नियंत्रण - पिछले तीन दशकों के आंकड़े दर्शाते हैं कि गठबंधन सरकारों को मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखने में संघर्ष करना पड़ा।

**निष्कर्षतः** यह कहा जा सकता है कि गठबंधन सरकारों को सभी को साथ लेकर चलने की आवश्यकता होती है और उनका रुझान अधिक उदार, सहमतिपूर्ण और संघवाद के प्रति अधिक सम्मानजनक होना चाहिए। भारत में गठबंधन सरकारों ने, अपनी चुनौतियों के बावजूद ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण सुधार किए हैं और विविध हितों को संतुलित किया है जिससे मजबूत आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति में योगदान मिला है।

#### **उद्देश्यः**

1. गठबंधन सरकार एवं पूर्ण बहुमत की सरकार में अंतर का अध्ययन करना।
2. पूर्ण बहुमत की सरकार के निर्णयों का अध्ययन करना।
3. गठबंधन सरकार में आयी चुनौतियों का अध्ययन करना।
4. भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकार की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
5. भारतीय राजनीति में पूर्ण बहुमत की सरकार का अध्ययन करना।

#### **विश्लेषण एवं विवेचना:**

##### **गठबंधन सरकारों की कार्यशैलीः**

1. आम सहमति की आवश्यकता: कई दलों के होने के कारण, नीतियों और निर्णयों पर आम सहमति बनानी पड़ती है, जिससे निर्णय प्रक्रिया धीमी हो सकती है।
2. समझौतों का बोझः छोटे दलों को खुश करने और गठबंधन बनाए रखने के लिए अक्सर समझौते करने पड़ते हैं, जिससे मुख्य दल की नीतियों में बदलाव आ सकता है।
3. स्थिरता का खतरा: यदि गठबंधन में शामिल दल असंतुष्ट होते हैं, तो वे समर्थन वापस ले सकते हैं, जिससे सरकार गिर सकती है और चुनाव हो सकते हैं।
4. संस्थानों की स्वायत्तता: गठबंधन सरकारों के दौरान, संस्थाएँ (जैसे CAG) अधिक स्वतंत्र और शक्तिशाली दिख सकती हैं, क्योंकि उन्हें सत्ता के केंद्रीकरण पर अंकुश लगाने का मौका मिलता है। उदाहरणः नरसिंहा राव की अल्पमत सरकार (उदारीकरण) और यूपीए-1 व यूपीए-2 के दौरान विकास और संस्थानों की स्वतंत्रता।

##### **पूर्ण बहुमत सरकारों की कार्यशैलीः**

1. निर्णय लेने में तेज़ी: एक दल के पास बहुमत होने से नीतियों और निर्णयों को तेज़ी से लागू किया जा सकता है।
2. केंद्रीकृत शक्ति: सत्ता का केंद्रीकरण अधिक होता है, और सरकार के पास संस्थानों पर दबाव बनाने की अधिक शक्ति होती है।

3. नीतियों में निरंतरता (या बड़ा बदलाव): एक दल के एजेंडे पर काम किया जाता है, जिससे नीतियों में स्पष्टता आती है (या बड़े बदलाव होते हैं)।
4. संस्थागत स्वतंत्रता पर अंकुश: संस्थागत स्वायत्तता कम हो सकती है; जैसे मोदी सरकार के दौरान न्यायपालिका और अन्य संस्थानों पर दबाव के आरोप लगे। उदाहरण: 1984 के बाद पहली बार 2014 और 2019 में पूर्ण बहुमत हासिल करने वाली भाजपा सरकार, जो तेज़ी से फैसले लेने और लागू करने के लिए जानी जाती है।

#### मुख्य अंतर:

1. **निर्णय प्रक्रिया:** गठबंधन में धीमी, पूर्ण बहुमत में तेज़।
2. **स्थिरता:** गठबंधन में कम, पूर्ण बहुमत में ज्यादा (जब तक दल न टूटे)।
3. **सत्ता का वितरण:** गठबंधन में बँटा हुआ, पूर्ण बहुमत में केंद्रित।
4. **संस्थानों पर प्रभाव:** गठबंधन में बेहतर, पूर्ण बहुमत में कमज़ोर होने का खतरा।

#### निष्कर्ष:

दोनों ही प्रकार की सरकारों के अपने फायदे और नुकसान हैं; गठबंधन सरकारें समावेशी (Inclusive) होती हैं और लोकतंत्र को मजबूत करती हैं, जबकि पूर्ण बहुमत वाली सरकारें तेज़ विकास और स्थिरता के लिए बेहतर मानी जाती हैं, लेकिन सत्ता के केंद्रीकरण (Centralization of Power) का जोखिम रहता है। पूर्ण बहुमत की सरकार एकजुटता और निर्णायक कार्रवाई का प्रतीक है, जो एक दल के स्पष्ट जनादेश से शक्ति और स्थिरता प्रदान करती है, जबकि गठबंधन सरकार समझौते और समावेशिता का प्रतिनिधित्व करती है, जो विभिन्न विचारधाराओं को एक साथ लाकर लोकतंत्र को सशक्त करती है, भले ही इसमें अस्थिरता का जोखिम हो, भारत में दोनों ही प्रकार की सरकारों ने अपने अपने तरीकों से देश के विकास में योगदान दिए हैं।

#### संदर्भ सूची:

1. गुप्ता, डी. सी. (2018). भारतीय शासन व्यवस्था एवं राजनीति. विकास पब्लिशिंग हाउस.
2. चन्द्र, ज. एन. (2004). कॉलिशन पॉलिटिक्स: द इण्डियन एक्सपीरियंस. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.
3. कश्यप एवं गुप्ता (2008). राजनीति कोष. नेशनल बुक ट्रस्ट पब्लिकेशन.
4. तायल, वी. वी. (1998). भारतीय शासन एवं राजनीति. रावत पब्लिकेशन.
5. पवार, ओम प्रकाश (2012). गठबंधन सरकारें एवं राष्ट्रपति की भूमिका. एस. चंद एंड कंपनी.
6. फारिया, बी. एल. एवं कुलदीप फारिया (2019). भारतीय शासन एवं राजनीति. साहित्य भवन.

7. बाजपेयी, अटल बिहारी (2004). गठबंधन की राजनीति संपादक डॉ ना. भा. हटाटे; प्रभाव प्रकाशन.
8. लक्ष्मीकांत, एम. (2014). भारत की राज्य व्यवस्था; माइक्रो हिल, एजुकेशन लि.
9. वर्मा, क. वि. एवं सुनील (2017-18). भारतीय राज्य व्यवस्था. विटास्टा पब्लिशिंग.
10. शर्मा, हरिश्चन्द्र (2015). भारत में राज्यों की राजनीति. कॉलेज बुक डिपो.